

gnügen, Belustigung NALOD. 2, 38.

विकृदय (2. वि + कृ^०) n. Muthlosigkeit AV. 5, 21, 1.

विकृष्टक (von कृष्ट mit वि) adj. Jmd weh thuend, verletzend VJUTP. 79.
अतीव तल्पन्दुर्वचा भवतीक विकृष्टकः (विकृष्टकः ed. Calc.) MBH. 1, 3076.
विकृष्टन (wie eben) n. = विबाधा TRIK. 1, 1, 132. = विकृष्टा und वि-
उम्ब (विउम्बन) 3, 3, 265. fg. H. an. 4, 189. fg. (विकृष्टन) und MED. n. 207.
= मर्दन H. an. MED. das Wehthun, Verletzen, Beleidigen VJUTP. 24. 61.
127. 197.

विकृष्टा (wie eben) f. Beleidigung: मा च करोथ विकृष्ट (d. i. विकृष्टा)
मानुषाणाम् LALIT. ed. Calc. 37, 9.

विकृदिन् (von 2. वि + कृ^०) adj. etwa Tümpel oder Pfützen bildend
(Gegens. ununterbrochen fließend): आपः KĀTH. 23, 6.

विकृत् (von कृ = कृ^० mit वि) f. (sich krümmend) ein schlangen-
ähnliches Thier, Wurm u. dgl. VS. 25, 7.

विकृल (von कृल् mit वि) 1) adj. (f. आ) erschöpft, mitgenommen, er-
griffen, seiner nicht ganz mächtig, verwirrt: = विक्लव AK. 3, 1, 44. H.
448. HALĀJ. 2, 231. विकृलास्मि कृतानेन कथिता बलिना बलात् MBH.
2, 2341. 3, 2375. 2455. 2577. 15795. 5, 3695 (nach der Lesart der ed.
Bomb., विकल ed. Calc.). 7208. 6, 31. 7, 277. लीववत् 614. 9, 616 (सु^०).
13, 4077. HARIV. 4764. R. 1, 77, 2. R. GORR. 1, 39, 15. 3, 35, 85. 64, 7. 68,
20. SUÇR. 2, 538, 14. RAGH. 8, 37. KUMĀRAS. 4, 4. SPR. (II) 1242. KATHĀS.
15, 91. 17, 42. 18, 93. विकृलाकुल 97. 223. 24, 179. 28, 159. 37, 125. 39,
119. RĀGA-TAR. 4, 443. 8, 1147. 1768. BHĀG. P. 3, 2, 33 (अति^०). 8, 11, 25.
9, 14, 32. MĀRK. P. 124, 19. पतिशोकेन R. 4, 20, 19. 58, 10. भयेन KATHĀS.
54, 117. मद्^० R. 1, 9, 25. 37. 3, 23, 35. BHĀG. P. 4, 25, 57. 5, 9, 19. PĀNĀT. ed.
ORN. 34, 3. KULL. zu M. 3, 34. शोकसंताप^० R. GORR. 2, 15, 7. 39, 24. KATHĀS.
12, 105. 16, 106. भय^० MBH. 3, 2552. BHĀG. P. 1, 8, 8. 17, 29. रामागमन^०
R. GORR. 1, 78, 2. अबलाविरक्लेश^० SPR. 1482. मदन^० SARVADARĢANAS.
96, 16. स्मर^० Verz. d. Oxf. H. 105, b, 28. रामानुज^० R. GORR. 2, 120, 21.
अतिप्रमोदभर^० BHĀG. P. 5, 4, 4. प्रीति^० 8, 17, 5. प्रेम^० 3, 4, 35. 4, 9, 42. 48.
7, 15, 78. प्रतिष्ठाविघ्न^० RĀGA-TAR. 3, 442. अश्रुकलाति^० BHĀG. P. 4, 4, 2.
पुलकाश्रु^० 8, 22, 15. कृदयमत्तर्बिहलम् MĀLATIM. 142, 5. चेतना MBH.
13, 4072. चेतसु KATHĀS. 9, 49. मृगयाविकृलं चेतः Schol. zu ÇĀK. 22, 5.
हरिकुणकविरुक्लिकृदय BHĀG. P. 5, 8, 12. स्त्रीप्रेतणप्रतिस्मीतण-
विकृलात्मन् 8, 12, 22. वडवा erschöpft R. GORR. 2, 17, 24. विकृलास्तस्य
(गिरेः) पार्श्वेभ्यः सर्पा दग्धार्धदेहिनः — निश्चेतुः HARIV. 5330. क्रुदशोष-
विकृला शफरी KUMĀRAS. 4, 39. निमेषोन्मिष^० (कालचक्र) MBH. 14, 1237.
विकृलाङ्ग MĀRK. P. 134, 58. मदविकृलाङ्ग PĀNĀT. ed. ORN. 32, 21. 33,
12. मदनविकृलसालसाङ्गी KĀURAP. 1. मूर्खाविकृलतनु PĀNĀT. ed. ORN.
37, 20. लोचना MBH. 13, 4074. मदविकृललोचना BHĀG. P. 3, 20, 29. 8,
2, 23. 9, 17. कन्दुकविकृलानी 3, 22, 17. वाक्य MBH. 5, 7190. शोकविकृ-
लं वाक्यम् R. 4, 36, 21. वितव्याधिविकारविकृलगिरः SPR. 4344. संप्रभ-
यप्रणयविकृलया गिरा BHĀG. P. 3, 23, 9. अ^० gekräftigt, munter: स्रति-
पवृत्तस्तुर्गेलब्धतोयैर्विकृलैः MBH. 7, 164. चकर्ताविकृलः शिरः so v. a.
wohlgemuth, ohne sich lange zu bedenken KATHĀS. 60, 89. तत्तमै प्रादा-
दविकृलः 72, 160. — 2) m. Myrrhe RATNAM. 145. — Vgl. गन्ध^०, परि^०.

विकृलता f. nom. abstr. von विकृल 1) MBH. 3, 8680. KATHĀS. 105,
11. विकृलत n. desgl. MBH. 7, 1689. 9, 648. KĀM. NĪTRIS. 14, 59.

विकृलिन (von कृल् mit वि) adj. = विकृल Verz. d. Oxf. H. 117, a, 34.

1. वी, वैति NAIGH. 2, 6 (कात्तिकर्मन्). DHĀTUP. 24, 39 (गतिव्याप्तिप्रज्ञ-
ननकात्त्यसमखादनेषु). वीर्यम्, व्यसि, अय्यन्, व्यन्, वयत्, अवेषन्, वेस् 2.
und 3. sg. अविवेषीम्, विवाय; partic. वीरि^० s. bes. 1) verlangend auf-
suchen, — herbeikommen, appetere; gern annehmen, — genießen: कृ-
विषः प्रस्थितस्य वीरि^० कृतं शुषेयाम् RV. 1, 93, 7. धृतस्य AV. 7, 29, 1.
वीरि^० पातं पयसः 73, 5. वीरि^० स्वामाकृतिं शुषाणः 6, 83, 4. वेषि कृव्यानि
वीर्ये RV. 1, 74, 4. ब्रह्माणि 2, 5, 2. 7, 15, 6. अये वीरि^० कृविषा यन्ति दे-
वान् 17, 3. अघ्नम् 82, 7. पदस्य विशो वेः 6, 15, 14. शिष्टं न पिप्युषीव वेति
सिन्धुः 1, 186, 5. 189, 7. कृतारं व्यसि वार्या पुरु 5, 23, 3. 6, 1, 4. 10, 114,
1. उत या व्यसु देवपत्नीः 5, 46, 8. आर्यं शुषाणा विवसु TS. 1, 5, 2, 3. आ-
र्यस्य ÇAT. Br. 2, 2, 2, 19 und oft in stehenden Formeln. अये वेरि^० कृतम्
KĀTJ. ÇR. 23, 3, 1. व्यन् PĀNĀT. Br. 24, 1, 9. — 2) ergreifen: आपुषानि
RV. 10, 8, 7. unternehmen: हृत्यम् 4, 9, 6. 7, 8. — 3) zu gewinnen su-
chen, verschaffen, herbeischaffen: अग्निर्द्विर्मातृ देवान् RV. 1, 77, 2. यन्ति
वेषि च वार्यम् 7, 16, 5. 3, 8, 7. भागं नो अत्र वसुमत्तं वीतात् 10, 11, 8. वो-
रि^० मूर्त्तिकम् 4, 1, 5. — 4) heimsuchen, rächen: मा धातुर्गृहे अन्विक्षिणं वैः
nämlich an uns RV. 4, 3, 13. — 5) losgehen auf, bekämpfen, anfallen:
तं मा व्यत्याध्याः वृको न मृगम् RV. 1, 105, 7. वेषी देवौ युधये भूयसश्चित्
5, 30, 4. वयद्वत्सो वृषभं प्रभुवानः 10, 28, 9. अरि^० वक्षेण शवसाविषोः
4, 22, 5. दुक्तः 9, 71, 1.

— caus. वाययति und वापयति befruchten (vgl. u. Pr. P. 6, 1, 55. Vop.
18, 17. वाययति वापयति वा गाः पुरोवातः। गर्भं प्राकृत्यतीत्यर्थः P., Schol.
— अति überholen, überlegen sein: वेत्यपुर्ननिवान्वा अति स्पृधः
RV. 5, 44, 7.

— अप sich abwenden, abhold sein: सुतसोमं न कामो अप वेति मे RV.
5, 61, 18. न घा तद्विगप वेति मे मनः 10, 43, 2.

— अभि, partic. अभिर्वीत gesucht, begehrt: दक्षिणा RV. 7, 27, 4.

— अव aufsuchen: अव वेति सुतयं सुते मधु RV. 10, 23, 4.

— आ 1) unternehmen, anstellen: हृत्यम् RV. 1, 71, 4. यः प्रथमो दक्षि-
णामाविवाय 10, 107, 5. यस्मिन्ना कृष्टयः सोमपाः काममव्यन् 3, 49, 1. — 2)
herbeisuchen: प्रेषद्वद्वातो न सूरिरा RV. 1, 180, 6. आ यो विवायं सूचयाय
दैव्यु इन्द्राय 156, 5. आ यो विवायं सख्या सखिभ्यः 10, 6, 2. — 3) ergrei-
fen, packen: तदपानेनाजिघृत्तत् तदावयत् AIT. Up. 3, 3, 10. — आ वयति
unter den अतिकर्माणाः NAIGH. 2, 8.

— उपा zu Hilfe kommen: आ नो देवानामप वेतु शंसः RV. 10, 31, 1.

— उप herzustreben: अग्निरौ यज्ञमुप वेतु RV. 5, 11, 4. 8, 11, 4. anstre-
ben, zu erzielen suchen: शेषः RV. 10, 16, 5.

— नि intens. eindringen in, sich stürzen unter: उत स्मोसु प्रथमः सं-
रिष्यन्नि वेवेति श्रेणिभि रथानाम् RV. 4, 38, 6. नि वेवेति पलितो हृत आ-
सु 3, 55, 9.

— प्र 1) hinausstreben: प्र क्रन्दुर्नभ्यस्य वेतु RV. 7, 42, 1. — 2) zu-
streben auf, eingehen in: प्र क्षेत्रा शिष्या वीथो अघ्नम् RV. 1, 151, 3.
अस्त्रातोयै वृषभो न प्र वेति 10, 4, 5. angreifen: प्र प्र तान्दस्यूरिगिर्विवाय
7, 6, 3. — 3) inire, belegen, befruchten: सम्यः प्रवीता वृषणां ब्रजान् RV.
3, 29, 3. घोषधीः प्र वीयते AV. 11, 4, 3. 12, 4, 37. अन्स्थिकेन प्रजा प्रवी-
यते TS. 6, 1, 2, 1. पुराचीः प्रजाः प्रवीयते von hinten 3, 2, 4. 4, 20, 4.
KĀTH. 12, 8. — Vgl. अप्रवीत, स्तप्रवीत, प्रवय्या (zu belegen, zu befruchten).